UNIVERSITY OF JAMMU

जम्मू युनिवर्सिटी पोस्ट

उत्कृष्ट भविष्य की ओर अग्रसर

UNIVERSITY OF JAMMU

जनवरी-अप्रैल 2024 | जम्मू | वर्ष: 2 | अंक 4

एलजी सिन्हा ने जम्मू विश्वविद्यालय में 'गूंज–2024' का उद्घाटन कर शिक्षात्मक बदलाव को बढ़ावा दिया

जम्मू

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने जम्मू विश्वविद्यालय में एक बड़े उत्सव 'गूंज-2024' का उद्घाटन किया, जिसका उद्देश्य क्षेत्र की जीवंत संस्कृति का जश्न मनाना और छात्रों के शैक्षणिक अनुभवों को बेहतर बनाना है। इस उत्सव ने स्कूलों और कॉलेजों को अपनी ताकत दिखाने, टीम वर्क को प्रोत्साहित करने और जम्मू और कश्मीर में शिक्षा के समग्र विकास में योगदान देने के लिए एक मंच प्रदान किया।

उपराज्यपाल ने उद्घाटन समारोह में बड़ी संख्या में लोगों को संबोधित करते हुए इस बात पर प्रकाश डाला कि 'गूंज-2024' कितना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम है, बल्कि यह शैक्षणिक परिवर्तन की चिंगारी भी है। उन्होंने जम्मू विश्वविद्यालय को उत्सव के आयोजन और ऐसा स्थान बनाने के लिए बधाई दी, जहाँ छात्र अपनी रचनात्मकता को साझा कर सकते हैं और अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं। उन्होंने कहा, च्यह उत्सव छात्रों के लिए जीवंत सीखने के माहौल में भाग लेने का एक शानदार अवसर है।ज एलजी सिन्हा ने जम्मू-कश्मीर के अन्य विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों से जम्मू

विश्वविद्यालय द्वारा उठाए गए रचनात्मक कदमों का अनुसरण करने का आग्रह किया। उन्होंने 'डिजाइन योअर डिग्री', 'कॉलेज ऑन व्हील्स' और 'गूंज' पहल जैसे कार्यक्रमों को ऐसे उदाहरण के रूप में इंगित किया, जिन्हें छात्रों के बीच आजीवन सीखने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए कॉपी किया जा सकता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि ऐसे कार्यक्रम खोज और व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण उपकरण बन गए हैं।

अपने भाषण में उपराज्यपाल ने इस बात पर जोर दिया कि 21वीं सदी में विचार राष्ट्रों की नई संपत्ति होंगे। उन्होंने समझाया कि विश्वविद्यालयों और कॉलेज परिसरों की भूमिका केवल पारंपरिक शैक्षणिक कार्यों से आगे बढ़नी चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा, 'इन संस्थानों को युवा दिमाग विकसित करने की नींव के रूप में देखा जाना चाहिए जो दुनिया को बदल देंगे।' उन्होंने शैक्षणिक नेताओं से गांवों और कस्बों पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए उपयोगी विषयों, शोध और नवाचार को प्राथमिकता देने का आग्रह किया। लेफ्टिनेंट गवर्नर ने विशेष रूप से कहा कि विश्वविद्यालय परिसर को छात्रों के बीच टीमवर्क और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के केंद्र के रूप में काम करना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों से कहा कि वे कक्षाओं में पढ़ाने के तरीके पर पुनर्विचार करें और छात्रों को उनकी वास्तविक क्षमता तक पहुँचने में मदद करने के लिए प्रभावी

शेष पृष्ठ 2 पर

जम्मू विश्वविद्यालय में पत्रकारिता और मीडिया अध्ययन विभाग के नए भवन का भूमिपूजन समारोह संपन्न

जम्मू

जम्मू विश्वविद्यालय में पत्रकारिता और मीडिया अध्ययन विभाग के नए भवन के निर्माण के लिए भव्य भूमिपूजन समारोह, जो दो साल पहले अपने पहले बैच के साथ शुरू हुआ था, 24 फरवरी, 2024 को परिसर में हुआ। इस शुभ अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमेश राय एवं मुख्य अतिथि श्री संतोष वैद्य, आईज़एज़एस थे। भूमि पूजन कर भवन की आधारशिला रखी।

इस अवसर पर बोलते हुए, श्री वैद्य ने सभी विश्वविद्यालयों को व्यापक सुविधाएं प्रदान करने के महत्व पर जोर दिया और इन सभी विकास पहलों के लिए सरकार को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने युवा दिमागों को पोषित करने और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए उन्हें सशक्त बनाने के लिए शैक्षणिक संस्थानों को अपरिहार्य संसाधनों से लैस करने की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री वैद्य ने महत्वाकांक्षी मीडिया पेशेवरों के भविष्य को आकार देने में पत्रकारिता और मीडिया अध्ययन विभाग की भूमिका के बारे में बात की।

शेष पृष्ठ 2 पर

जम्मू–कश्मीर महिला विज्ञान कांग्रेस 2024: विज्ञान और नवाचार में महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा देने की नई पहल

शुभम कोतवाल

जम्मू। उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने जम्मू विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय च्जम्मू-कश्मीर महिला विज्ञान कांग्रेस 2024ज का उद्घाटन किया, और विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार में महिलाओं के लिए नेतृत्व की भूमिकाओं को बदलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में इस पहल की सराहना की। इस कांग्रेस का उद्देश्य महिला शोधकर्ताओं को सशक्त बनाना और एसज टीज ईज़एमज विषयों में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है, जो लिंग अंतर को पाटने के लिए जम्मू-कश्मीर प्रशासन के चल रहे प्रयासों के अनुरूप है।

अपने मुख्य भाषण में उपराज्यपाल ने विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में महिलाओं की उल्लेखनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और कहा, च्आज मुझे हमारी बेटियों को नवाचार और परिवर्तन लाते हुए देखकर गर्व हो रहा है।ज उन्होंने वैश्विक नवाचार महाशक्ति के रूप में भारत के कदम को आगे बढ़ाने में महिलाओं के महत्व पर जोर दिया और जम्मू-

कश्मीर में महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रशासन की प्रतिबद्धता दोहराई।

च्अनुसंधान में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी भारत को एक वैश्विक नवाचार महाशक्ति के रूप में स्थापित कर सकती है। जम्मू-कश्मीर में महिलाओं के नेतृत्व में विकास हमारा मुख्य उद्देश्य है, और इस लक्ष्य को हासिल करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।ज उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों से उन नीतियों को लागू करने का आग्रह किया जो विज्ञान और संबंधित विषयों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाती हैं।

उपराज्यपाल ने जम्मू-कश्मीर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के भीतर नीति आयोग के महिला उद्यमिता मंच के साथ एकीकृत एक विशेष सेल की स्थापना की भी घोषणा की। इस पहल का उद्देश्य वैज्ञानिक प्रयासों और उद्यमिता में महिलाओं को समर्थन देने के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने विश्वविद्यालयों को समर्पित प्रकाशन और फिल्में बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जो महिला वैज्ञानिकों के योगदान का जश्न मनाते हैं, पीएचडी कार्यक्रमों और विशेष अनुसंधान परियोजनाओं में महिला भागीदारी बढ़ाने का आग्रह करते हैं।

उद्घाटन समारोह के हिस्से के रूप में, उपराज्यपाल ने कांग्रेस के लिए सार पुस्तिका जारी की, जो विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस कार्यक्रम में जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर उमेश राय और सीएसआईआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल बायोलॉजी की निदेशक प्रोफेसर विभा टंडन सहित अन्य उल्लेखनीय अधिकारियों और वैज्ञानिकों सहित प्रतिष्ठित हस्तियों ने भाग लिया।

कांग्रेस में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिला शोधकर्ताओं के महत्वपूर्ण योगदान को प्रदर्शित करने वाले सत्रों, फ्लैश वार्ताओं और प्रस्तुतियों की एक जीवंत श्रृंखला प्रस्तुत की गई। दिन की शुरुआत जम्मू विश्वविद्यालय और कश्मीर विश्वविद्यालय की युवा महिला शोधकर्ताओं की प्रेरक फ्लैश वार्ता के साथ हुई। विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में फैली इन प्रस्तुतियों ने उपस्थित लोगों के बीच जीवंत चर्चा और जुड़ाव को प्रोत्साहित किया। प्रोज अरुण भारती, एच.ओ.डी. भौतिकी विभाग की सह-अध्यक्ष प्रोफेसर वीनू कौल ने इस सत्र की अध्यक्षता जम्मू विश्वविद्यालय में भौतिकी विभाग की इसके साथ सह-अध्यक्ष के रूप में प्रोज वीनू कौल एच.ओ.डी. वनस्पति विज्ञान रही ।

कांग्रेस के मुख्य आकर्षणों में से एक कश्मीर विश्वविद्यालय में अकादमिक मामलों के डीन प्रो. फारूक ए. मसूदी के नेतृत्व में एक सत्र था। मेदांता में स्तन सर्जरी की वरिष्ठ निदेशक डॉ. कंचन कौर ने च्चिकित्सा में महिलाएं- होना चाहिए या नहीं होना चाहिएज्ज विषय पर एक ज्ञानवर्धक वार्ता प्रस्तुत की। उन्होंने कार्य-जीवन संतुलन के महत्व और चिकित्सा

शेष पृष्ठ 2 पर

डॉ. बशीर अहमद लोन : जम्मू विश्वविद्यालय में उत्कृष्टता की यात्रा

जम्मू

जम्मू विश्वविद्यालय और वाडिया संग्रहालय की पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास अनुसंधान को आगे बढ़ाने में भूमिका पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बशीर अहमद लोन के साथ एक विचारोत्तेजक संवाद में पत्रकारिता और मीडिया अध्ययन के छात्रों ने जम्मू विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक समुदाय के एक प्रमुख व्यक्ति वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बशीर अहमद लोन के साथ बातचीत की। चर्चा में कुलपति प्रो. उमेश राय के नेतृत्व में जम्मू विश्वविद्यालय के उल्लेखनीय योगदान, क्षेत्र के भूवैज्ञानिक और जैविक इतिहास को संरक्षित करने में वाडिया प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय की अमूल्य भूमिका और पुरातत्व, नृविज्ञान और जीवाश्म विज्ञान जैसे क्षेत्रों में विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही महत्वपूर्ण शैक्षणिक प्रगति पर चर्चा की गई।

प्रश्न: कुलपति उमेश राय के नेतृत्व में जम्मू विश्वविद्यालय के नए योगदान क्या हैं?

श्री कोतवाल ने डॉ. लोन से जम्मू विश्वविद्यालय में कुलपति उमेश राय के नेतृत्व के प्रभाव के बारे में पूछकर बातचीत की शुरुआत की। डॉ. लोन ने इस बात पर जोर दिया कि विश्वविद्यालय ने शोध और अकादमिक उत्कृष्टता दोनों में बहुत प्रगति की है। डॉ. लोन ने कहा, च्प्रो. उमेश राय के नेतृत्व में, जम्मू विश्वविद्यालय ने एक ऐसा माहौल बनाया है जो नवाचार, अकादमिक जांच और अंत:विषय अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है, खासकर पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास जैसे क्षेत्रों में।' इस माहौल ने न केवल सहयोग को बढ़ावा दिया है बल्कि क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के साथ भी तालमेल बिठाया है।

प्रश्न: अकादमिक शोध में वाडिया संग्रहालय की क्या भूमिका है?

जब वाडिया प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय के अकादमिक पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान के बारे में पूछा गया, तो डॉ. लोन ने एक शोध और शैक्षणिक संस्थान के रूप में इसकी आवश्यक भूमिका पर प्रकाश डाला। जीवाश्मों, खनिजों और भूवैज्ञानिक नमूनों के अपने व्यापक संग्रह के लिए जाना जाने वाला यह संग्रहालय छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में कार्य करता है। डॉ. लोन ने बताया, च्च्वाडिया संग्रहालय में शिवालिक पहाड़ियों के जीवाश्मों सहित विभिन्न प्रकार के नमूने हैं, जो इस क्षेत्र के प्रागैतिहासिक युग की झलक पेश करते हैं।ज्ज संग्रहालय के संग्रह में जीवाश्म हाथी, प्रारंभिक दरियाई घोड़े और प्रागैतिहासिक घोड़े जैसे उल्लेखनीय प्रदर्शन शामिल हैं, जो सभी पृथ्वी पर जीवन के विकास को समझने में योगदान करते हैं।

प्रश्न: वाडिया संग्रहालय में कुछ अनोखी प्रदर्शनी क्या हैं?

डॉ. लोन ने संग्रहालय में कुछ अनोखी प्रदर्शनी का भी वर्णन किया, जिसमें शिवालिक पहाड़ियों से प्राप्त 11 फुट लंबा दांत भी शामिल है, जो हाथियों के प्राचीन पूर्वजों के बारे में जानकारी देता है। संग्रहालय में दुर्लभ जीवाश्म पौधे, कीड़े और समुद्री जीवन के रूप भी हैं, जिनमें से कुछ लाखों साल पुराने हैं। सबसे असाधारण वस्तुओं में से एक इंग्लैंड के कैम्ब्रिज से प्राप्त जीवाश्म शार्क का दांत है, जिसे खूबसूरती से संरक्षित किया गया है। उन्होंने कहा, 'ये नमूने न केवल ऐतिहासिक कलाकृतियों के रूप में काम करते हैं, बल्कि प्राकृतिक इतिहास में अकादमिक शोध को आगे बढ़ाने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।'

प्रश्न: संग्रहालय के संग्रह के माध्यम से अनुसंधान को आगे बढ़ाने में किस तरह मदद मिलती है?

श्री कोतवाल ने पूछा कि संग्रहालय के संग्रह किस तरह चल रहे अकादमिक अनुसंधान में योगदान देते हैं। डॉ. लोन ने विस्तार से बताया कि कैसे नमूने क्षेत्र के भूवैज्ञानिक और विकासवादी इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में काम करते हैं। डॉ. लोन ने कहा, च्जीवाश्म और भूवैज्ञानिक नमूने जीवन रूपों के विकास, बदलते पर्यावरण और पृथ्वी के इतिहास का अध्ययन करने के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करते हैं।ज्ज संग्रहालय का शोध शिवालिक संरचनाओं के अध्ययन के लिए आवश्यक साबित हुआ है और छात्रों को व्यावहारिक शिक्षा में शामिल होने का मौका देता है, जिससे उनका शैक्षणिक अनुभव समृद्ध होता है।

प्रश्न: प्राचीन मानव प्रथाओं के बारे में आपकी क्या अन्तर्दृष्टि है?

बातचीत का एक विशेष रूप से आकर्षक हिस्सा हाल ही में पुरातत्व संबंधी खोजों के इर्द-गिर्द घूमता था, जो प्रारंभिक मानव प्रथाओं को उजागर करते हैं। डॉ. लोन ने प्राचीन कसाई प्रथाओं से संबंधित साक्ष्य की खोज के बारे में विवरण साझा किया। अस्थि मज्जा को तराशने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले औजार, जिनके बारे में माना जाता है कि उनका इस्तेमाल प्रारंभिक मनुष्यों द्वारा किया जाता था, खुदाई स्थलों पर पाए गए। डॉ. लोन ने टिप्पणी की, ये खोजें न केवल मानव औजारों के विकास को प्रकट करती हैं, बल्कि प्रारंभिक सभ्यताओं की आहार संबंधी आदतों पर भी प्रकाश डालती हैं।

प्रश्न: जम्मू विश्वविद्यालय और उसके बाहर शोध का भविष्य क्या है?

जैसे-जैसे चर्चा आगे बढ़ी, श्री कोतवाल ने डॉ. लोन से जम्मू में अकादमिक शोध की भविष्य की दिशा के बारे में पूछा, खासकर पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास के बारे में। डॉ. लोन ने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि जम्मू विश्वविद्यालय और वाडिया संग्रहालय के बीच चल रहे सहयोग से इन क्षेत्रों में शोध की सीमाओं को आगे बढ़ाया जाएगा। डॉ. लोन ने निष्कर्ष निकाला, 'बढ़ती रुचि और चल रहे शोध के साथ, जम्मू पुरातात्विक खोजों का केंद्र बनने के लिए तैयार है जो प्राचीन सभ्यताओं के बारे में हमारी समझ को नया रूप दे सकता है।'

प्रश्न: वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक इतिहास को कैसे संरक्षित करेंगे?

बातचीत प्राकृतिक इतिहास को संरक्षित करने और उसका अध्ययन करने के महत्व पर विचार-विमर्श के साथ समाप्त हुई। डॉ. लोन ने जनता, विशेषकर छात्रों और युवा शोधकर्ताओं से वाडिया संग्रहालय का दौरा करने और प्राकृतिक दुनिया के इतिहास में खुद को डुबोने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, च्च्हमारे जीवाश्म और भूवैज्ञानिक संग्रह केवल अतीत के अवशेष नहीं हैं; वे हमारे विकास और हमें आकार देने वाले पर्यावरण को समझने की कुंजी हैं।ज्ज उन्होंने जोर देकर कहा कि इस ज्ञान को संरक्षित करना विद्वानों और शोधकर्ताओं की भावी पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण है।

इंजी. शुभम कोतवाल और डॉ. बशीर अहमद लोन के बीच आदान-प्रदान, वैज्ञानिक अनुसंधान को आगे बढ़ाने और क्षेत्र की समृद्ध प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करने में जम्मू विश्वविद्यालय और वाडिया संग्रहालय की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। शैक्षणिक संस्थानों के निरंतर समर्थन और डॉ. लोन जैसे समर्पित शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता के साथ, जम्मू और उसके बाहर पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास अनुसंधान का भविष्य उज्ज्वल दिखता है।

वाडिया प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय के बारे में

जम्मू में स्थित वाडिया प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, प्राकृतिक इतिहास के संरक्षण और अध्ययन के लिए समर्पित एक अग्रणी संस्थान है। संग्रहालय के जीवाश्मों, चट्टानों, खनिजों और भूवैज्ञानिक नमूनों का व्यापक संग्रह विद्वानों और छात्रों के लिए एक शैक्षिक संसाधन और अनुसंधान केंद्र दोनों के रूप में कार्य करता है। अपने प्रदर्शनों और शोध पहलों के माध्यम से, संग्रहालय पृथ्वी के भूवैज्ञानिक और जैविक इतिहास की वैज्ञानिक समझ को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पृष्ठ 1 से आगे

एलजी सिन्हा ने जम्मू

ढंग से मार्गदर्शन करें। उन्होंने कहा, च्चशिक्षा को छात्रों के भीतर रचनात्मकता को जगाना चाहिए और उनके दिमाग को स्पष्ट, सरल, सहज और स्वतंत्र बनाना चाहिए।ज्ज शिक्षा के लक्ष्यों के बारे में बात करते हुए, एलजी सिन्हा ने छात्रों के बीच भविष्योन्मुखी मानसिकता के निर्माण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिक्षकों को साहसिक अन्वेषण और नए विचारों, शोध और नवाचारों को उत्पन्न करने के जुनून को प्रेरित करने के लिए प्रोत्साहित किया। छात्रों को तेज़ी से बदलती दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने के लिए रचनात्मकता और व्यावहारिक कौशल पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, उपराज्यपाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 को लागू करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने उल्लेख किया कि इस नीति का उद्देश्य युवा पीढ़ी को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जोड़ना है। पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक शिक्षा के साथ मिलाकर, उनका मानना है कि छात्र समाज की मदद करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकते हैं। कार्यक्रम में, एलजी सिन्हा ने च्च्कॉलेज ऑन व्हील्सज्ज पहल की एक फोटो प्रदर्शनी देखने के लिए समय निकाला। इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को उनकी विशिष्ट पहचान खोजने और उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करना है। उपराज्यपाल ने कहा कि यह पहल छात्रों को टीमवर्क और रचनात्मकता पर जोर देने वाले अनुभवों के माध्यम से सीखने के मूल्यवान अवसर प्रदान करती है। च्च्कॉलेज ऑन व्हील्सज्ज कार्यक्रम विशेष रूप से खास है क्योंकि यह शिक्षा को नियमित कक्षा से परे ले जाता है। यह दूरदराज़ के क्षेत्रों में छात्रों तक पहुँचता है, सीखने के संसाधन और अवसर सीधे उनके पास लाता है। यह पहल न केवल शहर और ग्रामीण शिक्षा के बीच की खाई को पाटने में मदद करती है बल्कि छात्रों को उनकी सीखने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए भी प्रोत्साहित करती है। समारोह के दौरान, उपराज्यपाल ने उत्सव मनाने के लिए एक स्मारिका जारी की, साथ ही च्च्कॉलेज ऑन व्हील्सज्ज पहल से संबंधित प्रकाशन और जम्मू विश्वविद्यालय की एक परियोजना रिपोर्ट भी जारी की। च्च्कॉलेज ऑन व्हील्सज्ज पहल की उपलब्धियों और प्रभाव को दिखाने वाली एक डॉक्यूमेंट्री भी प्रस्तुत की गई, जिसमें क्षेत्र के छात्रों के लिए शैक्षिक अनुभव को बदलने में कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों के महत्वपूर्ण अतिथियों, शिक्षकों, वरिष्ठ अधिकारियों और उत्सुक छात्रों सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

जम्मू और कश्मीर उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो. दिनेश सिंह ने भी समारोह के दौरान बात की। उन्होंने उपराज्यपाल के विचारों को दोहराते हुए उच्च शिक्षा संस्थानों से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि उनकी गतिविधियाँ और पहल समाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित करें। प्रो. सिंह ने शैक्षणिक कार्यक्रमों को समुदाय की आवश्यकताओं के साथ जोड़ने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि विश्वविद्यालयों को स्थानीय मुद्दों से अधिक जुड़ना चाहिए और अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से उन्हें हल करने में मदद करनी चाहिए। यह दृष्टिकोण न केवल शिक्षा के महत्व को बढ़ाता है बल्कि छात्रों में जिम्मेदारी की भावना को भी बढ़ावा देता है। इस उत्सव में विभिन्न सांस्कृतिक प्रदर्शन, कला प्रदर्शन और कार्यशालाएँ शामिल थीं, जिससे छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों के साथियों से जुड़ने और अपने कौशल का प्रदर्शन करने का मौका मिला। यह जम्मू और कश्मीर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाता है, संगीत, नृत्य और कला के माध्यम से विविधता का जश्न मनाता है। इससे पहले दिन में, एलजी सिन्हा ने छात्रों के एक समूह द्वारा किए गए प्रभावशाली मार्च पास्ट की सलामी ली, जिसमें उन्होंने अपना अनुशासन और जोश दिखाया। उन्होंने क्षेत्र के इतिहास में एक सम्मानित व्यक्ति जनरल जोरावर सिंह को भी श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने राज्य की विरासत में योगदान देने वालों को सम्मानित करने के महत्व को पहचाना। चूंज-2024ज्ज का उद्घाटन केवल संस्कृति का उत्सव नहीं था, यह शैक्षणिक संस्थानों को समाज की बदलती जरूरतों के अनुसार विकसित होने और खुद को ढालने का आह्वान था। जम्मू और कश्मीर में शिक्षा के भविष्य के लिए उपराज्यपाल का दृष्टिकोण बेहतर भविष्य को आकार देने में रचनात्मकता, नवाचार और टीम वर्क के महत्व के बारे में बढ़ती जागरूकता को दर्शाता है। जैसे-जैसे उत्सव समाप्त हुआ, छात्रों के बीच उत्साह और प्रेरणा स्पष्ट थी। कई लोगों ने च्च्कॉलेज ऑन व्हील्सज्ज और च्चगूंजज्ज जैसी पहलों द्वारा प्रदान किए जाने वाले विकास और सीखने के अवसरों के बारे में अपनी उत्सुकता व्यक्त की। ऐसे कार्यक्रमों का प्रभाव आने वाले वर्षों में प्रतिध्वनित होने की उम्मीद है, जो अपने समुदायों में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए समर्पित विचारकों, नवप्रवर्तकों और नेताओं की एक नई पीढ़ी को प्रेरित करेंगे। जम्मू विश्वविद्यालय में 'गूंज-2024' का उद्घाटन समारोह क्षेत्र में शैक्षणिक सुधार और सांस्कृतिक उत्सव को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा। रचनात्मकता, टीम वर्क और सामुदायिक जुड़ाव पर जोर देने के साथ, उत्सव ने जम्मू और कश्मीर के भविष्य को आकार देने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रतिभा और नवाचार को पोषित करने वाले वातावरण को बढ़ावा देकर, जम्मू विश्वविद्यालय और उसके सहयोगी क्षेत्र के युवाओं के लिए एक उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

जम्मू विश्वविद्यालय ने

उन्होंने एक अच्छे शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डाला जो राष्ट्र के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए रचनात्मक और प्रगतिशील दृष्टि के साथ साहस और पारदर्शिता को प्रोत्साहित करता है।

जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमेश राय उपस्थित रहे। इस अवसर पर बोलते हुए, कुलपति ने इस महत्वपूर्ण पहल को साकार करने में उनके अटूट समर्थन के लिए माननीय उपराज्यपाल जम्मू-कश्मीर यूटी और जम्मू विश्वविद्यालय के चांसलर श्री मनोज सिन्हा के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। अपने स्वागत भाषण में योजना एवं विकास विभाग के डीन प्रो. मीना शर्मा ने परियोजना के महत्व और विश्वविद्यालय के शैक्षणिक परिदृश्य पर इसके सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए परियोजना का एक व्यापक विवरण दिया। उन्होंने बताया कि पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग के लिए नामित जी+2 भवन का कुल क्षेत्रफल 17719 वर्ग फुट (1646.74 वर्ग मीटर) है। इस अवसर पर, जम्मू विश्वविद्यालय के अनुसंधान अध्ययन के डीन प्रोफेसर नीलू रोहमेत्रा ने अपने पिता श्री एस.के. को श्रद्धांजलि अर्पित की डीन रोहमेत्रा की स्मृति में एक स्वर्ण पदक की स्थापना की घोषणा की। जम्मू विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार प्रो. राहुल गुप्ता ने उपस्थित सभी लोगों को औपचारिक रूप से धन्यवाद दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉज़ गरिमा गुप्ता ने किया। डीन, निदेशक, रेक्टर, शिक्षण विभागों के प्रमुख, निर्माण विभाग के कई अन्य अधिकारी, विश्वविद्यालय के विभिन्न संघों के प्रतिनिधि, विभाग के अधिकारी, कर्मचारी, संकाय और छात्र, साथ ही पत्रकारिता और मीडिया अध्ययन के छात्र इस अवसर पर उपस्थित रहे।

उपराज्यपाल ने जम्मू

क्षेत्र में महिलाओं के लिए समान अवसरों की आवश्यकता पर जोर दिया साथ ही उन रूढ़िवादिता को चुनौती दी जो अक्सर उनकी क्षमता को सीमित करती हैं।

एक अन्य सत्र में, हैदराबाद विश्वविद्यालय की प्रो. बिंदु ए. बंबाह ने च्चविज्ञान में लैंगिक समानता को प्रभावित करने वाले कारकज्ज को संबोधित करते हुए भौतिक विज्ञान में महिलाओं के सामने आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए सामाजिक परिवर्तन का आह्वान किया। इसके बाद, अशोक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गौतम मेनन ने जलवायु परिवर्तन जागरूकता की तात्कालिकता पर प्रकाश डाला और विज्ञान में लिंग अंतर को संबोधित करने के उद्देश्य से स्वाति पोर्टल पेश किया। एजेंडे को और समृद्ध करते हुए, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर परमजीत खुराना ने कृषि चुनौतियों से निपटने में निरंतर सीखने के महत्व पर जोर देते हुए च्जलवायु लचीली फसलों के लिए प्लांट जीनोमिक्सज्ज पर चर्चा की। कांग्रेस में बेल्जियम के प्रो. कैरोलिन फॉस्ट के साथ एक सत्र भी आयोजित किया गया, जिन्होंने मानव आंत माइक्रोबायोम में अंतर्दृष्टि प्रस्तुत की, जिससे स्वास्थ्य और जीव विज्ञान के आसपास चर्चा का दायरा और व्यापक हो गया। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की प्रोफेसर नीलू जैन गुप्ता ने आधुनिक जीवन शैली में पारंपरिक प्रथाओं के एकीकरण की वकालत करते हुए 'सर्कैडियन लाइफस्टाइल के आणविक आधार' विषय पर अपने व्याख्यान में प्राचीन ज्ञान प्रणालियों की खोज की। इन विशेषज्ञ वार्ताओं के अलावा, कांग्रेस में युवा वैज्ञानिकों के बीच सहयोग और नवाचार के माहौल को बढ़ावा देने के लिए प्रख्यात शोधकर्ताओं द्वारा मूल्यांकन की गई पोस्टर प्रस्तुतियाँ भी शामिल थीं। विभिन्न मौखिक वार्ता सत्रों ने उभरते शोधकर्ताओं को अपने काम का प्रदर्शन करने की अनुमति दी, जिसमें वैज्ञानिक समुदाय में नई प्रतिभाओं के पोषण के लिए कांग्रेस की प्रतिबद्धता पर जोर दिया गया।

पत्रकारिता के छात्रों ने दैनिक स्टेट समाचार के औद्योगिक दौरा किया

Jammu University के Journalism विभाग के विद्यार्थियों ने State Samachar कार्यालय व Press में आकर जानीं अखबार की बारीकियां, सीखे Reporting से लेकर Printing तक के गुर।

विशाली

जम्मू, 29 फरवरी 2024 - पत्रकारिता विभाग के छात्र हाल ही में क्षेत्र के एक प्रमुख समाचार पत्र दैनिक स्टेट समाचार के औद्योगिक क्षेत्र के दौरे पर गए। इस दौरे का उद्देश्य छात्रों को समाचार संगठन के कामकाज के बारे में

व्यावहारिक अनुभव और अंतर्दृष्टि प्रदान करना था। इस दौरे के दौरान, छात्रों ने मुद्रण प्रक्रिया देखी और समाचार पत्र उत्पादन की पेचीदगियों के बारे में सीखा। उन्होंने वरिष्ठ पत्रकारों और संपादकों से भी बातचीत की, जिन्होंने अपने अनुभव साझा किए और पत्रकारिता में करियर बनाने के बारे में बहुमूल्य सलाह दी। एक अनुभवी पत्रकार दीपक सर ने आज के समाज में पत्रकारिता के महत्व पर जोर दिया और छात्रों को इस क्षेत्र मेंकरियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उप-संपादक संजय गुरश्रेष्ठ ने एक स्ट्रिंगर के रूप में अपने अनुभव साझा किए और पत्रकारिता में काम करने की चुनौतियों और अवसरों के बारे में जानकारी दी। एक क्राइम रिपोर्टर गोविंद चौहान ने छात्रों से अपराध की कहानियों को कवर करने के अपने अनुभवों और इस विशेष क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल के बारे में बात की। वरिष्ठ पत्रकार मोहम्मद शमशेर सिंह चरक ने पत्रकारिता में काम करने की तुलना एक चुनौतीपूर्ण रास्ता पार करने से की और छात्रों से इस पेशे की मांगों के लिएतैयार रहने का आग्रह किया। दैनिक राज्य समाचार के कर्मचारियों ने छात्रों को वीडियोग्राफी से लेकर संपादन और मुद्रण तक समाचार एजेंसी केसंचालन का अवलोकन भी कराया। इस दौरान जम्मू विश्वविद्यालय के जूनियर उप-संपादक और पूर्व छात्र रोहन चौधरी भी मौजूद रहे। इस यात्रा में छात्रों के साथ संकाय सदस्य डॉ. प्रदीप बाली, डॉ. रविया और कुवरजीत मैम भी मौजूद थे। छात्रों ने इसयात्रा का भरपूर आनंद उठाया और पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हुए बहुमूल्य सबक सीखे। छात्रों के लिए औद्योगिक यात्रा एक बहुमूल्य शिक्षण अनुभव था, जिसने उन्हें पत्रकारिता उद्योग की गहरी समझ प्रदान की और उन्हें इस रोमांचक क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया।

शेफर्ड बना एक फिल्म निर्माता

रिगज़िन और हिमानी

स्टैनज़िन दोरजाई ग्या का जन्म लद्दाख के सबसे पुराने गांवों में से एक ग्या गांव में हुआ था। वह अर्ध-खानाबदोश जीवन जीने वाले लोगों से घिरा एक चरवाहा था, जो जौ के खेतों, याक, भेड़ और बकरियों की देखभाल करता था, जिन्हें वह अपना सहपाठी मानता था।

अपनी शिक्षा के लिए उन्हें माध्यमिक विद्यालय में जाने का अवसर मिला, लेकिन 10वीं कक्षा पास नहीं कर पाए, SECMOL (लद्दाख के छात्र, शैक्षिक और सांस्कृतिक आंदोलन) एक नई उम्मीद के रूप में उभरा, जहाँ दृश्य माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। फिर उन्होंने जम्मू विश्वविद्यालय में दाखिला लिया जो उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ क्योंकि यहाँ के पुस्तकालय के संकाय के साथ-साथ पर्यावरण में बदलाव के कारण उन्हें पढ़ाई करने और अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए माहौल मिला और साथ ही विविध छात्रों की उपस्थिति भी मिली। उन्होंने 2005 में कला स्नातक की डिग्री पूरी की। स्टैनज़िन दोरजाई का फिल्मों से पहला संपर्क तब हुआ जब वे 19 साल के थे। लद्दाख-मनाली हाईवे पर कुछ लोग फिल्में देख रहे थे और वे उनके साथ बैठे थे। तभी उन्हें विजुअल मीडिया के प्रभाव का एहसास हुआ। एक साल बाद 1994 में पूरे लद्दाख में शिक्षा के माध्यम को बदलने के लिए एक बड़ा शैक्षिक आंदोलन हुआ। बाद में उन्होंने लद्दाखी भाषा में छोटी-छोटी फ़िल्में बनाना शुरू किया और उन्हें गाँव के लोगों को दिखाया, जिनमें 80 साल के बुज़ुर्ग से लेकर छोटे बच्चे तक शामिल थे, सभी ने पूरे पैक में फ़िल्में देखीं।

स्टैनज़िन दोरजाई ने बताया कि जब दुनिया भर से स्वयंसेवक समर्थन और यात्रा करने के लिए आते थे, तो वह उन्हें अपनी फ़िल्में दिखाते और वे मेरे दृश्यों और तारीफ़ों की सराहना करते थे। एक बार एक फ्रांसीसी निर्देशक ने उनकी फ़िल्म देखी और उनके काम की सराहना की और उनसे इन फ़िल्मों को यूरोप में प्रदर्शित करने के लिए कहा क्योंकि वे मूल कहानियाँ थीं और वहाँ के दर्शकों द्वारा सराही जाएँगी। उनकी पहली फ़िल्म का नाम बिहाइंड द मिरर था और उन्हें 27 छात्रों के साथ फ़्रांस जाने का अवसर मिला। उनकी कुछ अन्य फ़िल्में हैं हैप्पी डेज़ ऑफ़ द ग्लेशियर, द ब्रोकन डाउन और उनकी सबसे लोकप्रिय पुरस्कार विजेता फ़िल्म द शेफर्डेस ऑफ़ द ग्लेशियर। द शेफर्डेस ऑफ द ग्लेशियर को भारत के उच्च हिमालय में रहने वाली एक चरवाहे की मौलिक सोच और चित्रण के लिए पहचाना गया, जो कठोर सर्दियों के महीनों में और शिकारियों के हमेशा मौजूद खतरे के बीच अपनी बकरियों के झुंड की देखभाल करती है। इस फिल्म को मिले कुछ पुरस्कार थे - बैंफ माउंटेन फिल्म और बुक फेस्टिवल 2016 में ग्रैंड प्राइज, बेस्ट नेचर एंड एनवायरनमेंट अवार्ड, यूशुआइस टीवी, माउंटेन इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, 2016, ऑट्रांस, फ्रांस, ग्रैंड प्रिक्स, ले ग्रैंड बिवौक फिल्म फेस्टिवल, 2016, अल्बर्टविले, फ्रांस, और कई अन्य।

2000 में, स्टैनज़िन दोरजाई ग्या ने लेह में हिमालयन फ़िल्म हाउस की स्थापना की, उनका उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों के लिए काम करने के लिए एक जगह और मंच स्थापित करना था। 2000 में, स्टैनज़िन दोरजाई ग्या ने लेह में हिमालयन फ़िल्म हाउस की स्थापना की, उनका उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों के लिए काम करने के लिए एक जगह और मंच स्थापित करना था। एक व्यक्ति किसी दिन मर सकता है लेकिन फ़िल्में और दृश्य पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते रहेंगे और भविष्य के लिए विरासत छोड़ेंगे। लोगों को लद्दाख के मूल सार को पकड़ने में मदद करेगा।

46वीं वार्षिक अंतर-कॉलेजिएट एथलेटिक मीट (पुरुष एवं महिला) चैम्पियनशिप 2023-24 चैम्पियनशिप संपन्न

जम्मू विश्वविद्यालय के पीजी विभाग ने 46वीं वार्षिक अंतर-कॉलेजिएट एथलेटिक मीट (एम एंड डब्ल्यू) चैंपियनशिप 2023-24 में ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी जीतकर अपना वर्चस्व दिखाया। यह चैंपियनशिप जम्मू विश्वविद्यालय के

जम्मू

खेल एवं शारीरिक शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित की गई थी। पुरुष वर्ग की चैंपियनशिप जम्मू विश्वविद्यालय के पीजी विभाग ने 61 अंकों के साथ जीती। वहीं, महिला वर्ग में जीसीडब्ल्यू उधमपुर ने 42 अंकों के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया। जम्मू विश्वविद्यालय की डीन प्लानिंग प्रोफेसर मीना शर्मा उक्त चैंपियनशिप के समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं, जिन्होंने बड़ी संख्या में उपस्थित एथलीटों, भाग लेने वाले कॉलेजों के अधिकारियों, विश्वविद्यालय के कर्मचारियों और छात्रों के साथ-साथ नागरिक समाज के लोगों के बीच मंच पर गणमान्य व्यक्तियों द्वारा एथलीटों को व्यक्तिगत पदक और ट्रॉफी प्रदान की। समारोह को संबोधित करते हुए प्रोफेसर मीना शर्मा ने आयोजकों को इस प्रकार के खेल आयोजनों के लिए बधाई दी, जो जम्मू विश्वविद्यालय के संबद्ध कॉलेजों के छात्रों को अपनी खेल प्रतिभा दिखाने के अलावा एक-दूसरे के करीब आने का अवसर प्रदान करेंगे। उन्होंने कॉलेजों की टीमों के साथ आए एथलीटों और अधिकारियों की सामूहिक भागीदारी की भी सराहना की। श्री रविंदर सिंह आईटीओ और जेएंडके एमेच्योर एथलेटिक एसोसिएशन के उपाध्यक्ष ने भी इस प्रकार की गतिविधियों के आयोजन और युवा दिमागों को स्वस्थ जीवन की ओर शामिल करने के लिए खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय केप्रयासों और पहल की सराहना की। इस प्रकार की गतिविधियां छात्रों को समाज की बेहतर तरीके से मदद करने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं। ब्रिगेडियर पीएस चीमा, सेना मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, एनसीसी ग्रुप कमांडर, मुख्यालय जम्मू ने अपने उल्लेखनीयशब्दों, अनुभवों और उपलब्धियों के साथ सभा को संबोधित किया और उन्होंने इस उल्लेखनीय कार्यक्रम के आयोजन में आयोजकों को उनके समर्पण और प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई दी। उन्होंने आयोजन के प्रबंधन के प्रयासों की सराहना की। इससे पहले, जम्मू विश्वविद्यालय के खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय के निदेशक डॉ. दाउद इकबाल बाबा ने उक्त चैंपियनशिप की औपचारिक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने उल्लेख किया कि खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय, जम्मू विश्वविद्यालय, 5 से 7 मार्च, 2024 तक 46वीं वार्षिक अंतर-कॉलेजिएट एथलेटिक मीट (एम एंड डब्ल्यू) चैंपियनशिप 2023-24 की मेजबानी करेगा, जिसमें पुरुष और महिला वर्ग में 40 कॉलेजों के एथलीटों ने भाग लिया। इससे पहले, जम्मू विश्वविद्यालय के खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय के निदेशक डॉ दाउद इकबाल बाबा ने उक्त चैंपियनशिप की औपचारिक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने उल्लेख किया कि खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय, जम्मू विश्वविद्यालय, 5 से 7 मार्च, 2024 तक 46वीं वार्षिक अंतर-कॉलेजिएट एथलेटिक मीट (एम एंड डब्ल्यू) चैंपियनशिप 2023-24 की मेजबानी करेगा, जिसमें पुरुष और महिला वर्ग में 40 कॉलेजों के एथलीटों ने भाग लिया। इस मेगा इवेंट में जम्मू विश्वविद्यालय के विभिन्न संबद्ध कॉलेजों के लगभग 700 खिलाड़ियों ने भाग लिया है। इस अवसर पर उपस्थित अन्य लोगों में प्रमुख थे, डॉ कोमल नागर, श्री विमल किशोर, श्री इरफान गोनी, श्री अजय पाल, एस पदम देव सिंह, श्री जय भारत, श्री रवीश वैद, श्री राज कुमार बख्शी, श्री गगन कुमार, श्री संजीव कुमार, एस हरिंदरपाल सिंह, डॉ महक, एसडीआर। इंद्रजीत सिंह, सुश्री मनु सिंह पवार, श्री ऋषिव शर्मा, जम्मू विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेजों के शारीरिक निदेशक (पीटीआई) और चैंपियनशिप के तकनीकी अधिकारी। समारोह की कार्यवाही का संचालन श्री ऋतिक खुल्लर और श्री आर्यन देव सिंह ने किया, जबकि औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन श्री विमल किशोर, सहायक प्रोफेसर,खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय ने किया।

जम्मू विश्वविद्यालय ने मीडिया छात्रों के लिए तथ्य-जांच कार्यशाला का आयोजन किया

जम्मू

जम्मू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने गूगल न्यूज इनिशिएटिव (जीएनआई) इंडिया ट्रेनिंगनेटवर्क के सहयोग से हाल ही में तथ्य-जांच पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्देश्य उभरते पत्रकारों और मीडिया शिक्षकों को डिजिटल युग में गलत सूचना के प्रसार से निपटने के कौशल से लैस करना था। एमिटी विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉ. आदित्य कुमार शुक्ला ने संसाधन व्यक्ति के रूप में कार्य किया। कार्यशाला में तथ्य-जांच के महत्व पर विस्तार से चर्चा की गई और सूचित जनमत को आकार देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। आईआईएमसी जम्मू के डॉ. विनीत उत्पल ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई। विभागाध्यक्ष डॉ. गरिमा गुप्ता ने गलत सूचना और दुष्प्रचार के प्रचलित मुद्दे को संबोधित करने के लिए ऐसी

कार्यशालाओं की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने गलत सूचना के च्लाल झंडोंज्ज की पहचान करने और डीपफेक कोउजागर करने के लिए प्रभावी उपकरणों का उपयोग करने पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए संसाधन व्यक्ति की सराहना की। कार्यशाला ने प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया, जिससे वे गूगल लेंस, येनडेक्स,टीन आई और ईन-विड जैसे उपकरणों का उपयोग करके फ़ोटो, वीडियो और सामग्री की प्रामाणिकता को सत्यापित करने में सक्षम हुए। डॉ. शुक्ला ने प्रतिभागियों को भावनात्मक रूप से आवेशित सामग्री का शिकार होने से भी आगाह किया और

उनसे सोशल मीडिया से जानकारी का गंभीरता से मूल्यांकन करने का आग्रह किया।

प्रतिभागियों ने भ्रामक मीम्स से निपटने और टेलीग्राम चैनलों की निगरानी पर चर्चा की। उन्हें संदेशों के पीछे की मंशा पर सवाल उठाने, स्रोतों की पुष्टि करने और आंकड़ों की दोबारा जांच करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यशाला में पत्रकारिता और जनसंचार विभाग और अंग्रेजी विभाग के संकाय सदस्यों, छात्रों और विद्वानों ने भाग लिया। पत्रकारिता विभाग की छात्रा विशाली देवी और कोमल देवी ने कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समन्वय किया।

एनएसएस इकाई IV के सहयोग से जम्मू विश्वविद्यालय के खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय द्वारा गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया

डॉ दाउद इकबाल बाबा, डॉ. मनदीप सिंह, श्री. विमल किशोर, श्री. रवीश वैद, डॉ महक, सुश्री ऋचा मंडला स्वयंसेवकों के साथ गणतंत्र दिवस मनाते हुए।

जावेद

खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय और एनएसएस यूनिट- IV, जम्मू विश्वविद्यालय ने 26 जनवरी 2024 को बदलता भारत की थीम के साथ मनाया। समारोह कार्यक्रम माननीय कुलपति प्रो. उमेश राय और अध्यक्ष, एनज़एसज़एस, जम्मू विश्वविद्यालय की देखरेख में आयोजित किया गया था। डॉ. हेमा गंडोत्रा, कार्यक्रम समन्वयक एनज़एसज़एस, जम्मू विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम के संगठन में मार्गदर्शक के रूप में रहे। खेल निदेशक डॉ. दाउद इकबाल बाबा इस अवसर पर मुख्य अतिथि रहे। श्री विमल किशोर और श्री रवीश वैद विशेष अतिथि थे।

जम्मू विश्वविद्यालय के यूनिट IV के डॉ. मंदीप सिंह पीओ की देखरेख में खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय, जम्मू विश्वविद्यालय के एथलेटिक ट्रैक में 80 से अधिक स्वयंसेवक एकत्र हुए और कार्यक्रम के अनुक्रम के लिए आगे बढ़े जिसमें राष्ट्रगान, सांस्कृतिक गतिविधियां और राष्ट्र के प्रति ईमानदार काम की शपथ शामिल थी।

जम्मू विश्वविद्यालय के बीपीएड प्रथम सेमेस्टर के श्री आशीष इस कार्यक्रम के मुख्य मेजबान स्वयंसेवक थे। बीपीएड सेमेस्टर-3 की सुश्री लक्षिका जामवाल और एमपीईडी सेमेस्टर । की सुश्री अंकिता, खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय ने देशभक्ति गीत गाया, जम्मू विश्वविद्यालय ने शब्दावली एंकरिंग और गणतंत्र दिवस पर प्रभावी बातचीत के माध्यम से कार्यक्रम की मेजबानी की, इस कार्यक्रम की सफलता के लिए काम करने वाले अन्य स्वयंसेवकों में जम्मू विश्वविद्यालय के खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय के बीपीईडी सेमेस्टर-1 की सुश्री पलवे बोलोरिया और सुश्री शाक्षी गौरिया शामिल थे। बीपीईडी सेमेस्टर-1 से सुश्री पलवे बोलोरिया और सुश्री इशिमा वर्मा और जम्मू विश्वविद्यालय के खेल और शारीरिक शिक्षा निदेशालय एमपीईडी सेमेस्टर-1 की सुश्री अंकिता और सुश्री शालू ने देशभक्ति नृत्य प्रस्तुत किया। एनएसएस यूनिट चतुर्थ की ओर से प्रत्येक छात्र को जलपान दिया गया।

साहित्यिक क्लब, जेयू ने 'कठपुतलियों के माध्यम से कहानी सुनाना' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया

जम्मू।

कलात्मकता और कल्पना के एक रमणीय मिश्रण में मुख्य परिसर के विभिन्न संकायों के उत्साही लोग 24 अप्रैल, 2024 को जम्मू विश्वविद्यालय के क्लब, उत्साह के तत्वावधान में साहित्यिक क्लब द्वारा आयोजित 'कठपुतलियों के माध्यम से कहानी कहने' पर एक दिवसीय कार्यशाला के लिए एकत्र हुए। इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को मंत्रमुग्ध कर दिया, कठपुतली की आकर्षक दुनिया की यात्रा की पेशकश दी, कहानी कहने की कालातीत कला को उजागर करने के लिए कलात्मकता और कल्पना का सहज मिश्रण किया। अपने स्वागत भाषण में, उत्साह की अध्यक्ष प्रो. सतनाम कौर रैना ने इस तरह के आयोजन के लिए लिटरेरी क्लब और इसके समन्वयक प्रो. सदफ शाह के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने इस तरह के आयोजन को रचनात्मकता, कल्पना और कहानी कहने की कालातीत कला का उत्सव बताया। उन्होंने आगे कहा कि कठपुतली को अपने माध्यम के रूप में इस्तेमाल करके, प्रतिभागी अपनी कहानियों को जीवंत करने के लिए एक व्यावहारिक यात्रा शुरू कर सकते हैं। साहित्यिक क्लब की समन्वयक प्रो. सदफ शाह ने कार्यशाला के संसाधन व्यक्ति श्री जसविंदर सिंह का परिचय कराया, जो संगरूर, पंजाब से कला विशेषज्ञ हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कार्यशाला का उद्देश्य न केवल सिखाना है, बल्कि प्रतिभागियों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों के साथ फिर से जोड़ना और उनकी विरासत पर गर्व करना भी है। कठपुतली के माध्यम से, प्रतिभागियों को अपनी संस्कृति के एक अभिन्न पहलू को तलाशने और उसकी सराहना करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिससे कलात्मक परंपराओं की उनकी समझ समृद्ध हुई।

श्री जसविंदर सिंह ने अपने संबोधन में कठपुतली कला को संचार के एक सशक्त माध्यम के रूप में रेखांकित किया, जिससे व्यक्ति आत्मविश्वास और रचनात्मकता के साथ अपनी कहानियाँ और दृष्टिकोण साझा कर सकते हैं। कार्यशाला की शुरुआत कथावाचन की कला पर एक आकर्षक चर्चा के साथ हुई। प्रतिभागियों को कहानी कहने की मूल बातें बताई गईं और उन्हें विभिन्न सामग्रियों से अपनी खुद की कठपुतलियाँ बनाने के लिए निर्देशित किया गया, जिससे प्रत्येक रचना में व्यक्तित्व और स्वभाव का समावेश हो।

संपादकीय मंडलः **मुख्य संपादक** - प्रो. श्याम नारायण, **प्रबंध संपादक** - डॉ. गरिमा गुप्ता, **सलाहकार संपादक** - ब्रजेश झा, **न्यूज एडिटर** - डॉ. प्रदीप सिंह, **वरिष्ठ उपसंपादक** - रोहन महाजन, आयुषी डोगरा, **उपसंपादक** - तानिया देवी, अनामिका पाल और सुहानी गुप्ता, **भाषा विशेषज्ञ** - शुभम मनकोटिया